उपसंहार

उपसंहार

मानवीय समाज विविध क्रिया-कलापों की एक जीवन्त प्रयोगशाला है। समाज में समय के अनुरूप निरन्तर कुछ न कुछ नया घटता रहता है। निरन्तर बदल रहे समाज की गतिविधियों की जानकारी समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने का काम पत्रकारिता करती है। **डॉ. धर्मवीर** के शब्दों में **'पत्रकारिता केवल खबरें इक्ट्ठा करना और छापना मात्र नहीं हैं।'**

वह मनुष्य और मनुष्य के बीच का सम्प्रेषण सामयिकता और इतिहास की सम्पूर्ण गति से जोड़ने का प्रयास है और कुल मिलाकर समाज के बाहरी विवरण के साथ-साथ उसके आन्तरिक अर्थ को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास है और बनते हुए इतिहास को मानवीय मूल्य-मर्यादा की ओर मोड़ते रहने का अनवरत साधन है। हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी के युग में रहते हैं।

इसी तरह यह भी सच है कि हम पत्रकारिता तथा विज्ञापन के युग में जी रहे हैं। पत्रकारिता के भी अनेक रूप हो गये हैं। अब इसका आशय केवल समाचारों तक ही सीमित नहीं है बल्कि विाापन से भी यह जुड़ा है। इसलिए यह धीरे-धीरे प्रभावशाली हो रहा है। पत्रकारिता का संबंध जनता से जुड़ा है।

पत्रकारिता ने पूरे संसार को बदलकर रख दिया है यही कारण है कि अब सामाजिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए भी इसका प्रयोग होता है। पत्रकारिता और विज्ञापन आधुनिक समाज में जागरूकता उत्पन्न करने के कार्य भी करता है।

पत्रकारिता में मुद्रित सामग्री स्थायी है जिसे पाठक बार-बार पढ़ सकता है। शीघ्रातिशीघ्र विज्ञापन प्रकाशित करवाने का पत्रकारिता एक सुलभ साधन है। जिसके कारण पत्रकारिता की बिक्री में विज्ञापन मदद करता है। प्रसार से कहीं अधिक पाठक पत्रकारिता में प्रकाशित विज्ञापनों को देखते व पढ़ते है। बार-बार विज्ञापन पत्रकारिता में प्रकाशित होते रहने से उपभोक्ताओं में वस्तु के प्रति विश्वसनीयता बढ़ती है और ब्राण्ड विशेष उनके मस्तिष्क में घर कर लेता है।

आज पत्रकारिता और विज्ञापन की महिमा को ध्यान में रखते हुए ही शैक्षणिक पाठ्यक्रम में पढ़ाया जा रहा है। असल में ये दोनों मानवीय प्रवुत्ति का हिस्सा है। पत्रकारिता में विज्ञापन का अंग बहुत ज्यादा होने के कारण मनुष्य की स्मृति हमेशा हमेशा ताजी रहती है तथा नयापन पैदा होता रहता है। पत्रकारिता के साथ विज्ञापन समाज के लाखों लोगों के सम्पर्क में आता है। इसलिए एक बहुत बड़ा आधार विज्ञापन का पत्रकारिता ही निभाते हैं।

आज सामाजिक परिवर्तन के महत्त्वपूर्ण अभिकरण के रूप में पत्रकारिता, विज्ञापन का प्रयोग करता जा रहा है। परिवार कल्याण, महिला शिक्षा, साक्षरता, छुआछूत की रोकथाम, पोलियो उन्मूलन, एड्स की रोकथाम जैसे सामाजिक महत्त्व के प्रति लोगों में जागरूकतामयी अभियान चलाने के लिए पत्रकारिता की भूमिका में विज्ञापन की दुनिया का सहारा लिया जाता है। विज्ञापन समाज को इतना आकर्षित करते है कि समाज इसके ऊपर पानी की तरह पैसे को खर्च करते हैं। इसलिए समाज का यह उद्देश्य बदलना चाहिए।

उसी प्रकार हमारी जो परंपरा है उसे पालन करके उसमें परिवर्तन लाना अच्छी बात है लेकिन वही बेकार होने से जीवन का बुरा हाल होता है। आजकल पत्रकारिता भी व्यावसायिक हो गया है। विज्ञापन पत्रकारिता का एक अभिन्न अंग है, जिसके बिना पत्रकारिता कुछ भी नहीं है। जैसा कि सब्जी में स्वाद के लिए नमक डालते हैं, ना कि नमक में सब्जी डालते हैं।

उसी तरह पत्रकारिता में विज्ञापन का महत्त्व एवं स्थान होना चाहिए न कि विज्ञापन में पत्रकारिता का महत्त्व होना चाहिए। आज के युग के लिए पत्रकारिता में जन-जागरण और जन-कल्याण के लिए लाभदायक यिद्ध होना चाहिए। तभी समाज में पत्रकारिता और विज्ञापन का स्थान हमेशा रहेगा। **विज्ञापनों का प्रयोग पत्रकारिता एक हद तक लाभदायक है परंतु विज्ञापन ही सर्दे - सर्वा हो जाए तो यह कहाँ का न्याय है। विज्ञापन के बिना पत्रकारिता संभव नहीं है, विज्ञापन पत्रकारिता का मूल आधार है मगर पत्रकारिता विज्ञापनों की न बन जाए इसका भय है।**

अतः अंत में यही सारभूत रूप से स्पष्ट है कि विज्ञापन पत्रकारिता में महक, खुशबू लाए और मनुष्य के रक्त संचार के समान बनी रहे तो उसकी महिमा में चार चाँद और लग लाएगें।